एक अलग ही दुनिया : दुनियादारी

डॉ.बालकवि लक्ष्मण सुरंजे
अध्यक्ष, हिंदी विभाग एवं शोध निदेशक, बी.के. बिड़ला महाविद्यालय, कल्याण, जिला- ठाणे (महाराष्ट्र)
Email: suranjebalkavi@gmail.com

श्री सुहास शिरवळकर जी द्वारा रचित 'दुनियादारी' उपन्यास पर आधारित श्री संजय जाधव जी द्वारा निर्मित 'दुनियादारी' यह मराठी सिनेमा सन २०१३ में सिनेमा गृह में प्रदर्शित हुआ | इसके प्रदर्शन को लेकर बहुत सारे प्रिंट मिडिया और इलेक्ट्रॉनिक मिडिया द्वारा प्रचार-प्रसार किया गया | संजय जाधव जी का कल्पनाशील दिग्दर्शन, स्वप्निल जोशी, अंकुश चौधरी, सई ताम्हनकर , उर्मिला कानेटकर, जितेन्द्र जोशी आदि प्रसिद्ध कलाकारों के अभिनय के बल पर तथा 'टिक टिक वाजते', जिंदगी जिंदगी', 'देवा तुझ्या गाभाऱ्याला', 'यारा यारा' इत्यादि गीत लोकप्रिय आकर्षक गीतों की धून के कारण 'दुनियादारी' फिल्म को जबरदस्त लोकप्रियता प्राप्त हुई | दोस्ती के लिए जीवन का बलिदान देने वाले दोस्त, महाविद्यालय के चौपाल पर चलने वाली गपशप, महाविद्यालय में चलने वाली युवा वर्ग की गतिविधियाँ देखने के प्रमुख उद्देश्य सेयुवा वर्ग का जन-सैलाब सिनेमा घरों की ओर आकर्षित हुआ | प्रस्तुत फिल्म कलाकारों की वेशभूषा एवं महाविद्यालीन वातावरण को बड़ी ही सफलता की फिल्माया गया है |प्रस्तुत फिल्म में शिरीन (सई), उर्मिला (मीनू) का अभिनय प्रेक्षक-वर्ग संमोहित हुआ | साथही शांत,संयमी व अल्हड स्वभाव का श्रेयस, स्टायलिश दिग्या (डी.एस.पी.) अपने अभिनय के बल पर प्रेक्षक-वर्ग पर अपना अधिपत्य स्थापित किये हुए हैं |

बाल्यावस्था से ही श्री संजय जाधव जी ने 'दुनियादारी' उपन्यास पर फिल्म बनाने का स्वप्न देखा था | इसलिए प्रस्तुत फिल्म-कलाकारों के चयन के लिए एक कार्यशाला का आयोजन श्री संजय मोने जी के मार्गदर्शन में किया गया | सिनेमा पर कलाकारों का लक्ष्य केन्द्रित हो, इसलिए उन्हें एक- एक अंडा दिया गया और सवेरे उसे संभालकर लाने का आदेश दिया गया | फिल्म निर्माण के सन्दर्भ में अपनी-अपनी यादें कलाकारों ने अभिव्यक्त की है | झी टॉकीज प्रस्तुत इस सिनेमा की निर्मिती संजय जाधव जी ने की है | समीर, पंकज तथा अमितराज जी का लोकप्रिय संगीत दिया गया है | श्री चिन्मय मांडेकर जी ने इसकी पटकथा लिखी है तथा संवादों की योजना की गई है |श्री प्रसाद भेडे जी ने छायांकन का कार्य किया गया है |

सिनेमा के प्रारंभमें ही संजय जाधव जी ने सुहास शिरवळकर जी को अभिवादन कर संबोधित किया है 'सर, आपके प्रिय उपन्यास पर सिनेमा निर्मित करने का प्रयास किया है, कुछ गलत हुआ हो तो क्षमा चाहता हूँ |

हम आपके ही बालक है |' श्रेयस को मिलने के लिए न्ययार्क से आया हुआ प्रीतम (सुशांत शेलार) व शिरीन (सई) अपनी कार से पुणे शहर प्रयाण करते हैं | 'वृध्दावस्था की झुकी हुई शिरीन और श्रेयस पुणे में मिलते है |' ऐसा कहकर श्रेयस की कहानी का आरंभ करती है | स्नातक कक्षा में उनचास प्रतिशत प्राप्त करने उपरांत श्रेयस के पिता उसपर नाराज होते हैं | पियानो बजाने वाली राणी माँ कहती हैं कि 'मैं अपने बेटे को पुणे के एस. पी. कॉलेज में भेज रही हूँ |' श्रेयस को कहती हैं कि 'तुम अपनी स्नातकोत्तर की पढाई के पुणे में पूरी करो | तुम पुणे के एस.पी. कॉलेज में दाखिला लो, वहां मैंने आपकी छात्रावास में व्यवस्था कर दी है |' ऐसा कहती है और श्रेयस की नाक से रक्त बहने लगता है |

मुंबई का निवासी श्रेयस पुणे के एस.पी. महाविद्यालय में प्रवेश करता है | हाफ शर्ट, उसपर हाफ स्वेटर, हाथ में घडी, कंधे पर शबनम लिए हुए श्रेयस (स्वप्नील जोशी) प्रोफेसर पाटनकर जी भाषण सुनने के लिए आता है | एस.पी. महाविद्यालय का महत्त्व प्रतिपादित करते समय उनका ध्यान डी.एस.पी. अर्थात दिगंबर शंकर पाटील (अंकुश चौधरी) की ओर जाता है | डैशिंग व्यक्तित्त्व के धनि दिग्या अपनी सिगारेट जलाने के लिए माचिस खोज रहा होता है | उसके आने पर पार्श्व-संगीत की धुन 'धीना..धीन..धा..' संगीत गूंजता है | इससे डी.एस.पी. की दहशत का अंदाजा लगाया जा सकता है | प्रो.पाटनकर का कुछ न सुनते हुए वह सरस्वती के सामने सिगारेट जलाता है | डी.एस.पी.की इतनी दहशत है कि, उसे कॉलेज के चपरासी भी भयभीत रहते हैं | श्रेयस के कान पर जोर से थप्पड़ जमाकर कहता है कि "दिगंबर शंकर पाटील, अपने नाम में पूरा कॉलेज समाया हुआ है |" स्टाईल सिगारेट का धुंवा उड़ाते हुए अपने दबंग प्रवृत्ति के मित्रों में सम्मिलित हो जाता है |श्रेयस घोरपडे को मारने के बजाय श्रेयस तळवलकर पर हाथ उठाया, इसलिए वह श्रेयस से माफी मांगता है | श्रेयस घोरपडे, सुरेखा (डी.एस.पी. की प्रेयसी) को छेड़ने के कारण वह उसकी पिटाई करने वाला होता है |

साईनाथ की गैंग कक्षा शुरू होते समय श्रेयस को पकड़कर ले जाते हैं और उसे दिग्या के खिलाफ भड़काते हैं | दिग्या व साईनाथ की गैंग में महाविद्यालय के प्रांगण में हाथापाई शुरू होती है | एक-दूसरों पर कांच की बोतलों से हमला किया जाता है | दिग्या को घेर लिया जाता है | परन्तु दिग्या व उसकी गैंग साईनाथ की गैंग को प्रखररूप से प्रत्युत्तर देते हैं | साईनाथ एडगावकर (जितेन्द्र जोशी) फ़िल्मी डायलोग के अंदाज में कहता हैं कि "भाग- भाग के आया और मौत को समोर पाया ... ये रिशी पकूर.. ये दोस्ती हम नहीं तोड़ेंगे... |" उतने में पुलिस की गाडी के आने पर आपसी झगडा रुक जाता है | पहली बार सिगारेट का कश खींचने से श्रेयस को खाँसी आती है | "ये पहली सिगारेट और तू पहला " दिग्या को देखकर श्रेयस कहता है और आपसी मित्रत्व के संबंध घनिष्ठ होते हैं | और फ़िल्मी गीत शुरू होता है – जिंदगी, जिंदगी, जिंदगी | दोस्तों की दुनियादारी में हसीन ऐसा क्या हुवा रे |" इस गीत से कट्टा गैंग की पहचान होती है | अशक्या, उम्या, सुरेखा तथा दिग्या का प्रेम, सॉरी, नित्या इन सभी मित्रों का वर्णन किया गया है | 'एक अलग ही दुनिया, एक अलग ही दुनियादारी |' (एक एक वेगळीच दुनिया, एक वेगळीच दुनियादारी)

लाल गाडी से उतरते हुए गॉगल लगाए, हाफ ड्रेस पहने हुए शिरीन (सई ताम्हणकर) की ओर कट्टा गैंग का लक्ष्य केन्द्रित होता है |सिनेमा देखने लिए शिरीन, उसका भाई प्रीतम व कट्टा गैंग के मित्र जाते हैं | उनकी आपसी पहचान मित्रत्त्व में परिवर्तित होती है | कोल्हापुर के पार्षद श्री विनायकराव घाटगे शिरीन व प्रीतम के पिताश्री होते हैं | शिरीन पुणे में अपने मेडिकल की पढाई पूरी कर रही होती है | प्रीतम शिरीन का भाई है, यह जानकर श्रेयस प्रफुल्लित होता है | पार्श्वसंगीत के साथ गीत बजता है – "टिक-टिक वाजते डोक्यात, धड धड वाढते ठोक्यात, कधी जुनी कधी नवी संपते अंतर झोक्यात |" सोनू निगम तथा सायली पंकज इनके जादुई आवाज से यह गीत बहुत मशहूर हुआ | शिरीन और श्रेयस एक दुसरे के करीब आने लगते हैं | शिरीन श्रेयस को प्यास से 'बच्चू' कहकर संबोधित करती है | सुरेखा को प्रताड़ित करने वाले को समझाना और मीनू जो पुलिस अधिकारी की लड़की होने के नाते उसे पटाने की जिम्मेदारी श्रेयस पर आती है | पुलिस की ओर से श्रेयस का मार खाना , अस्पताल में श्रेयस को एडमिट करना इत्यादि प्रसंगों के माध्यम से कट्टा गैंग में आपसी मित्र-भाव वृद्धिंगत होता है |

सदाशिव टी स्टॉल पर गैंग का चाय पीना, महाविद्यालय के चौपाल (कट्टा) पर बैठना आदि दृश्यों को बड़ी-ही सजीवता के साथ चित्रित किया गया है | पु.ल.देशपांडे गार्डन में चित्रित किया गया 'यारा यारा' यह गीत भी प्रेक्षकों को आकर्षित करता है | एकांत में श्रेयस शिरीन के साथ चुंबन करते समय शिरीन कहती है कि 'हाथों में कैडबरी होते हुए, बिस्किट आने पर भी तुमसे कुछ छुटता नहीं है |' प्रस्तुत फिल्म में साईनाथ के पिता चुनाव में जीत प्राप्त करने की ख़ुशी में साईनाथ बेहोशी के साथ नाचता है | दिग्या श्रेयस को लेकर बार (मधुशाला) में लेकर जाता है, वहां शराब के नशे में चूर एम.के. श्रेयस को दिखाई देता है | अशक्या दिग्या का साथ छोड़कर साईनाथ के साथ जुड़ जाता है |शिरीन के जन्म दिवस के अवसर पर कट्टा गैंग के साथी मदिरापान करके डान्स करते हैं | मीनू भी श्रेयस से प्यार करती है | वह भी अपने प्रेम की अभिव्यक्ति करती है | सुरेखा के माता-पिता सुरेखा पर गुस्सा करते हैं | श्रेयस दिग्या को समझाता है | साईनाथ का शिरीन के साथ विवाह तय होता है | साईनाथ को देखकर श्रेयस उदासी का अनुभव करने लगता है | सुरेखा का दुसरे व्यक्ति के साथ विवाह करवा दिया जाता है | प्रेम की खातिर संपूर्ण रूप से उजड़ा हुआ दिग्या को सुरेखा अपनी एक चिट्ठी से सन्देश भेजती हैं कि "आप मुझे भूल जाइए और मेरे घर वालों को किसी भी प्रकार की हानि नहीं पहुंचाओंगे |" इस तरह की सौंगंध देती है | शिरीन अपनी माँ की व्यथा बताती है | श्रेयस और मीनू की प्रेम की अभिव्यक्ति इस गीत के माध्यम से अभिव्यक्त होती है–'देवा,तुझ्या गाभाऱ्याला उंबराच नाही, सांग कोठे ठेऊ माथा |" इस गीत के माध्यम से शिरीन और श्रेयस के आपसी संबंधों में अस्वस्थता प्रकट होती हुई दिखाई देती है | दिग्या बार में जाकर तोड़फोड़ तथा उधम मचाता है | श्रेयस दिग्या की जान बचाता है | 'तेरी मेरी यारी' इस गीत के माध्यम से दोनों की मित्रता और भी दृढ हो जाती है |

राणी माँ का श्रेयस गोखले के साथ प्रेम था, श्रेयस गोखले अर्थात एम.के. यह देखकर श्रेयस अस्वस्थता का अनुभव करने लगता है | श्रेयस मीनू को समझता है कि वह उसके स्वप्न का राजकुमार नहीं है | शिरीन और साईनाथ के विवाह-समारोह में श्रेयस जाता है, वहां साईनाथ के साथियों द्वारा श्रेयस की पिटाई की जाती है | वहां दिग्या,अशक्या तथा प्रीतम के कारण शिरीन और श्रेयस का विवाह संपन्न होता है | कैंसर के कारण श्रेयस शिरीन

के पास अपनी अंतिम इच्छा प्रकट करते हुए कहता है कि "मुझे भूलियेगा नहीं, मेरे जन्म-दिवस पर सभी मित्र एक साथ आयेंगे | मैं इस दुनिया में रहूँ या न रहूँ किन्तु मुझे भूलियेगा नहीं, मेरे साथ सभी मित्रगण कॉलेज के चौपाल (कट्टे) पर बैठकर गपशप करेंगे |" अंत में श्रेयस के यादों के साथ सिनेमा का समापन होता है |

निष्कर्ष रूप से हम यह कह सकते हैं कि प्रस्तुत 'दुनियादारी' यह सिनेमा वर्तमान युगीन युवा-वर्ग की गतिविधियों तथा आज की मानसिकता को व्याख्यायित करता है | सिनेमा का प्रारंभ और अंत दोनों में तालमेल नहीं दिखाई देता | दिग्दर्शक ने सिनेमा के अनुरूप उपन्यास के कुछ कथा-प्रसंगों को परिवर्तित करने का प्रयास किया है | जब किसी प्रसिद्ध कृति का फिल्मांतरण किया जाता है, तो मूल लेखक की बहुत कुछ संवेदना छूट जाती है और बहुत कुछ संवेदनाएं फिल्म की विशेषताओं के अनुरूप जुड़ जाती है |फिल्म के अभिनेताओं के अभिनय, पटकथा लेखक, संवाद योजना तथा पार्श्व-गीत, संगीत के समुचित प्रभाव से 'दुनियादारी' यह सिनेमा लोकप्रियता के चरम शिखर पर जा पहुँचा | कुल मिलाकर यह कह सकते हैं कि साहित्यिक कृति का यह सफल फिल्मांतरण कहा जा सकता है |